

# अखिल भारतीय कार्यशाला

(दिनांक: २०.०८.२०१५ से ०९.०९.२०१५)

## विषय- प्रमाणविमर्श

अध्यक्ष

प्रो. बाल शास्त्री

संयोजक

प्रो. भगवत् शरण शुक्ल

अध्यक्ष, व्याकरण विभाग

सहसंयोजक

डॉ. रमाकान्त पाण्डेय

आयोजक

व्याकरण विभाग

संस्कृतविद्याधर्मविज्ञान संकाय,

काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००५

## प्रमाणविमर्श

परिचय :-

अखिल ब्रह्माण्ड प्रत्येक दार्शनिकों के लिए प्रमेय अर्थात् यथार्थज्ञान का विषय है। इन प्रमेयों का यथार्थज्ञान जिन साधनों से सम्पन्न किया जाता है उसे प्रमाण कहते हैं। प्रमितिकरणं प्रमाणम्। प्रमा यथार्थज्ञान को कहा जाता है। वैयाकरणों ने प्रमा के स्वरूप को कुछ अधिक ही परिभाषित किया है। उनके अनुसार अनिर्ज्ञात अर्थ विशेष्यक सामान्य विशेष आदि धर्मरूप सकल सम्भावित धर्मप्रकारक ज्ञान को प्रमा कहते हैं और उसका करण अर्थात् असाधारण कारण को प्रमा कहा जाता है। यद्यपि भारतीय दार्शनिक परम्परा में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा ये छः आस्तिक दर्शन माने जाते हैं तथा चार्वाक में शरीरात्मवादी, मन आत्मवादी। जैन में श्वेताम्बर, दिगम्बर। बौद्ध में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक ये नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत माने जाते हैं। तथापि वेदांगों में विशेष रूप से वैयाकरणों में प्रक्रियाविमर्श के साथ-साथ दर्शन की भी समृद्ध परम्परा रही है। जिस परम्परा के संवाहक आचार्य व्याडि जो कि पाणिनिमुनि के मातुल हैं इन्होंने संग्रह नामक एकलक्षश्लोकात्मक ग्रन्थ की रचना की थी। काल प्रभाव से उसके विलुप्त की ओर उन्मुखावस्था में परम वैयाकरण श्रीभर्तृहरि ने तथा उनके पूर्ववर्ती आचार्य पतञ्जलि ने इन वैयाकरण सम्बन्धी दार्शनिक तत्त्वों की स्थापना क्रमशः वाक्यपदीय एवं महाभाष्य ग्रन्थों में भी की है।

आचार्य कपिल ने अपने सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्दप्रमाण को त्रिविधं प्रमाणं तत्सिद्धौ सर्वसिद्धेर्नाधिक्यासिद्धिः १/२/८८ इस सूत्र के द्वारा स्वीकार किया। इसी प्रकार आचार्य पतञ्जलि ने योग शास्त्र में प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि १/१/७ तीन प्रमाणों को स्वीकार किया है। महर्षि गौतम ने न्यायशास्त्र में प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दाः प्रमाणानि १/१/३ सूत्र के द्वारा चार प्रमाणों की मान्यता दी। तथैव महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन में इन्हीं चारों को प्रमाणत्वेन स्वीकार किया। शब्दप्रमाण के रूप में “तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् १.१.३ इस कथन से वेद को प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं, कुछ वैशेषिक प्रत्यक्ष एवं अनुमान को ही प्रमाण मानते हैं। पूर्वमीमांसा दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि इन छः प्रमाणों की चर्चा आयी है। उत्तरमीमांसा के प्रायः सभी आचार्य भी प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि प्रमाणों की चर्चा करते हैं।

नास्तिक दार्शनिकों में चार्वाक केवल प्रत्यक्ष की बात करता है, तो जैन के यहां भी प्रत्यक्ष, अनुमान के साथ-साथ अपने आचार्यों के वचनों को भी आदर देते हैं। इनके अनुसार ज्ञान के साधन प्रत्यक्ष और परोक्ष हैं। प्रत्यक्ष भी दो प्रकार का है। सांख्यवहारिक और पारमार्थिक। परोक्ष के स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान तथा आगम ये पांच भेद हैं। इस

प्रकार बौद्ध भी प्रत्यक्ष तथा अनुमान इन दो को प्रमाण मानते हैं। किसी रूप में शब्द भी पूर्वाचार्यों के वचन में श्रद्धा होने से प्रमाणत्वेन स्वीकृत होता है। पाश्चात्या दार्शनिक भी प्रत्यक्ष तथा अनुमान को प्रमाण मानते हैं। शेष में उतनी श्रद्धा नहीं है। इसी प्रकार वैज्ञानिक भी प्रत्यक्ष तथा अनुमान को प्रमाण मानते हैं। पूर्व मान्यताओं में भी उन्हीं को प्रमाण मानते हैं, जो उनके प्रयोग में सफल दिखाई देते हैं। वेदांगों में वैयाकरणों ने प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभ्यास और अदृष्ट को प्रमाणत्वेन स्वीकार किया है। कुछ आचार्य ऐतिह्य को भी प्रमाण मानते हैं। ज्योतिष शास्त्र में ग्रह नक्षत्र आदि को प्रमाणत्वेन स्वीकार करके भविष्य फल का एवं मुहूर्त आदि का निर्धारण करते हैं।

इन सभी प्रमाणों का परिज्ञान एक साथ कहीं भी प्राप्त नहीं है, जिन पर पर्याप्त विचार हो। एतदर्थ इन सभी दार्शनिकों के प्रमाणों पर पूर्णज्ञान हेतु यह कार्यशाला आयोजित की जा रही है, जो दिनांक २०.८.२०१५ से १.९.२०१५ तक चलेगी। इसमें सभी दर्शनों के मान्य प्रमाणों पर प्रत्येक विषय के अधिकारी विद्वान् अपने वक्तव्य देंगे। जिससे सभी को पर्याप्त लाभ होगा। इसमें सभी अध्यापक, शोधच्छात्र एवं परास्नातक छात्र भाग ले सकते हैं, जिनकी इस विषय में रुचि एवं जिज्ञासा है। आशा है कि इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को पूर्णलाभ होगा।

#### पंजीयन शुल्क

पंजीयन शुल्क १०००/- रुपये है। जिसे विभाग में नगद जमा कर रसीद प्राप्त करें। प्रतिभागियों को यात्रा व्यय एवं आवास भोजनादि की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। पंजीयन हेतु अन्तिम तिथि ५/०८/२०१५ है।

सम्पर्क : प्रो. भगवत् शरण शुक्ल, अध्यक्ष, व्याकरण विभाग एवं संयोजक,  
मोबाईल नं. ०८००४९३१०६६, ऑफिस ०५४२-६७०१९७०  
Email- bsshuklabhu@gmail.com  
डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, सहसंयोजक, मोबाईल नं. ०९४५४७४९०२९

पंजीयन फार्म

## अखिल भारतीय कार्यशाला

(२०.८.२०१५ से ०९.०९.२०१५)

विषय - प्रमाणविमर्श

नाम : .....

पद/कार्य : .....

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्था का नाम : .....

विशेषज्ञता : .....

पत्राचार का पता : .....

मोबाईल नं : .....

ई-मेल : .....

पंजीयन शुल्क.....

दिनांक : .....

हस्ताक्षर